जल से ही कल

श्रीमती सुधा शर्मा
C/o डॉ० संजय कुमार शर्मा,
राजसं. क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहटी

भारत देश में प्यासे को पानी पिलाना पुण्य माना जाता है,
पर इसी देश में विकट पेय जल–समस्या से इन्सान स्वयं प्यासा मरा जाता है।
बूँद–बूँद पानी के लिए तरस रहे लोग
और बड़ी लापरवाही से कुछ लोग कर रहे जल का दुरूपयोग।
देश में प्रतिवर्ष होती है भीषण जल की कमी,
प्यासी धरती की करूण पुकार क्यों न लाती आँखों में नमी ?

जल के किनारे ही फली–फूली समस्त प्राचीन सभ्यताएँ,
जल से ही तो जुड़ी हैं मनुष्य की जन्म से मृत्यु पर्यंत समस्त परम्पराएं
औषधीय गुणों के कारण जल को अमृत भी कहा जाता है,
सत्तर प्रतिशत मनुष्य का शरीर जल से बना माना जाता है।
पंच भूतों से निर्मित है ब्रह्मांड और यह शरीर,
छिति जल पावक गगन और समीर।

हमारे पुरखों ने जल–संरक्षण हेतु अथक प्रयास किया,
उन्होंने तालाबों, कूपों, झीलों और बावड़ियों का निर्माण किया।
इन सब में संचित होता था वर्षा का जल
और वह पूर्ण करता था जल की आवश्यकता सकल।
महान शासकों और हस्तियों ने भी कभी न की जल की उपेक्षा
उनके जल–संरक्षण व सामाजिक कार्यों की आज भी की जाती है प्रशंसा।
हमारे पूर्वजों को कभी न पड़ा था जल संकट भोगना
उनके पास थी दूर दृष्टि और सुव्यवस्थित योजना।

हमें उनके पथ पर चलना होगा
और पुराने जल–स्रोतों को दुरूस्त करना होगा।

यदि नए जल–स्रोत न बनवा सके हम तो कम–से–कम
वर्षा जल का संचय कर भू–जल संवर्धन का प्रयास करना होगा।

जल के मामले में हमारा देश अमीर माना जाता है,
प्रतिशत के हिसाब से लगभग
69 कृषि में, 23 उद्योगों में और 8 घरेलू कामों में लगाया जाता है।
हर दिन विश्व में लगभग 14 हजार लोग मरते हैं जल–प्रदूषण से,
जिनमें 580 व्यक्ति मारे जाते हैं अकेले भारत से।
अनुमानतः 2032 तक दुनिया की आधी आबादी,
कम पानी वाले इलाकों में रहने को विवश होगी
और 2050 तक विश्व के हर छठे आदमी को पानी की कमी की समस्या होगी।

शहरी मानव ने अपनी आवश्यकतावश बड़ी लापरवाही का काम किया।
उसने सूखे तालाबों के ऊपर ऊँचे भवनों और बाज़ारों का निर्माण किया।
अब वर्षाकाल में पानी कहाँ इकट्ठा होगा ?
उसका तो प्रवेश अवश्य मनुष्य के घरों और बाजारों में होगा।
सामान्य वर्षा से ही बाढ़ की स्थिति आ जाएगी।
और समस्त मनुष्य जाति त्राहि–त्राहि मचाएगी।

विद्वानों का कथन है कि जल का संकट प्राकृतिक नहीं वरन मनुष्य निर्मित है
और इसका निराकरण भी मनुष्य का परम उत्तरदायित्व है।
मनुष्य को वन–सम्पदा की रक्षा करनी होगी,
उसे हर कीमत पर धरती के तापमान की वृद्धि रोकनी होगी।
वन नहीं रहेंगे तो जल भी नहीं रहेगा
और जल के बिना मनुष्य भी कहाँ जी सकेगा।

रहीम जी की जल नीति

रहीम जी की जल नीति में है ज्ञान अपार
जो जान ले इनका अर्थ, वह संसार के भ्रम सागर को कर ले पार।
रहीम जी के उत्तम विचार,
करते हैं ज्ञान का संचार
और दूर करते हैं ये संशय का अंधकार।
प्रस्तुत हैं रहीम जी के अनमोल विचार,
भाव बोध हेतु जिनके आगे मैंने शब्द जोड़े हैं दो–चार।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष चून।
पानी के यहाँ तीन अर्थ
जान जल, चमक और मान।
चमक से होती मोती की पहचान,
पानी में घुलकर चूना रंगता मकान,
और मान–सम्मान से ही मनुष्य का जीवन बनता अर्थवान।

जाल परे जल जात बहि, ताजे मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़ति छोह।।
मीन को है जल से लगाव, जल को न है मीन से मोह।
जाल पड़ने पर, जल मीन से जुदा होकर रहता अप्रभावित,
परंतु मीन मर जाती और सह न पाती जल का बिछोह।
मोह है दुर्बलता, मोह देता दुख अपार,
प्रेम बनाता है सबल और खोलता है मोक्ष के द्वार।
धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय जियात अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय।।
है धन्य वह पंक जिस पर निर्भर हैं जीवन अनंत,
विस्तृत सागर का अथाह जल भी न कर पाता किसी की पिपासा शांत।
बड़प्पन विशालता में नहीं उपयोगिता में है।
महानता अंहकार में नहीं विनम्रता में है।

तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम पकाज हित संपत्ति संचहि सुजान।।
पेड़ और सरोवर के कर्म होते महान,
एक न खाता अपना ही फल तो दूजा न करता अपने ही जल का पान।
ये दोनों करते परहित और सभी करते इनका गुणगान,
ऐसे ही होते हैं जग में लोग महान,
जो दूसरों के लिए संपत्ति एकत्र कर, बनाते हैं जग में अपनी अलग पहचान।

पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानों काम।।
दुख–सुख में दें पूर्ण सहयोग और आएँ दूसरों के काम,
चाहे पानी भर जाए नाव में या फिर धन से पूर्ण हो जाए धाम।
डूबती नाव में भरे जल को दोनों हाथों से निकालें,
और घर के अधिक धन का दान दे कर भूखे को मरने से बचा लें।

ये रहे रहीम जी के कुछ अनमोल विचार,
हम इन्हें जानें, समझें और इन पर अवश्य करें विचार।